

Riyasat IAS Mentorship

Riyasat IAS
Mentorship

Secure Prelims Program 2026

English - हिंदी माध्यम

AN INITIATIVE UNDER **RIYASAT IAS MENTORSHIP**

*Shaping Potential
Into Performance*



Riyasat Ali Sir

IAS Mentor Since 2011

INTENSIVE & INTERATED

Prelims GS & CSAT PROGRAM

to Crack CSE 2026

मध्यकालीन इतिहास डेमो नोट्स - हिंदी मीडियम

More Information: 8090528260, 9319612575, 9266989092

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ईस्वी)

दिल्ली सल्तनत की स्थापना:

- 712 ईस्वी – मोहम्मद बिन कासिम: पहला मुस्लिम आक्रमण; सिंध पर विजय, उमय्यद खलीफ़ा का प्रांत।
- 998-1030 ईस्वी – महमूद गज़नी: 17 आक्रमण; सोमनाथ मंदिर का लूट (1025-26); उद्देश्य – धन-संपत्ति।
- 1175-1206 ईस्वी – मोहम्मद गोरी: दूसरा तुर्क आक्रमण; भारत में मुस्लिम शासन की नींव।

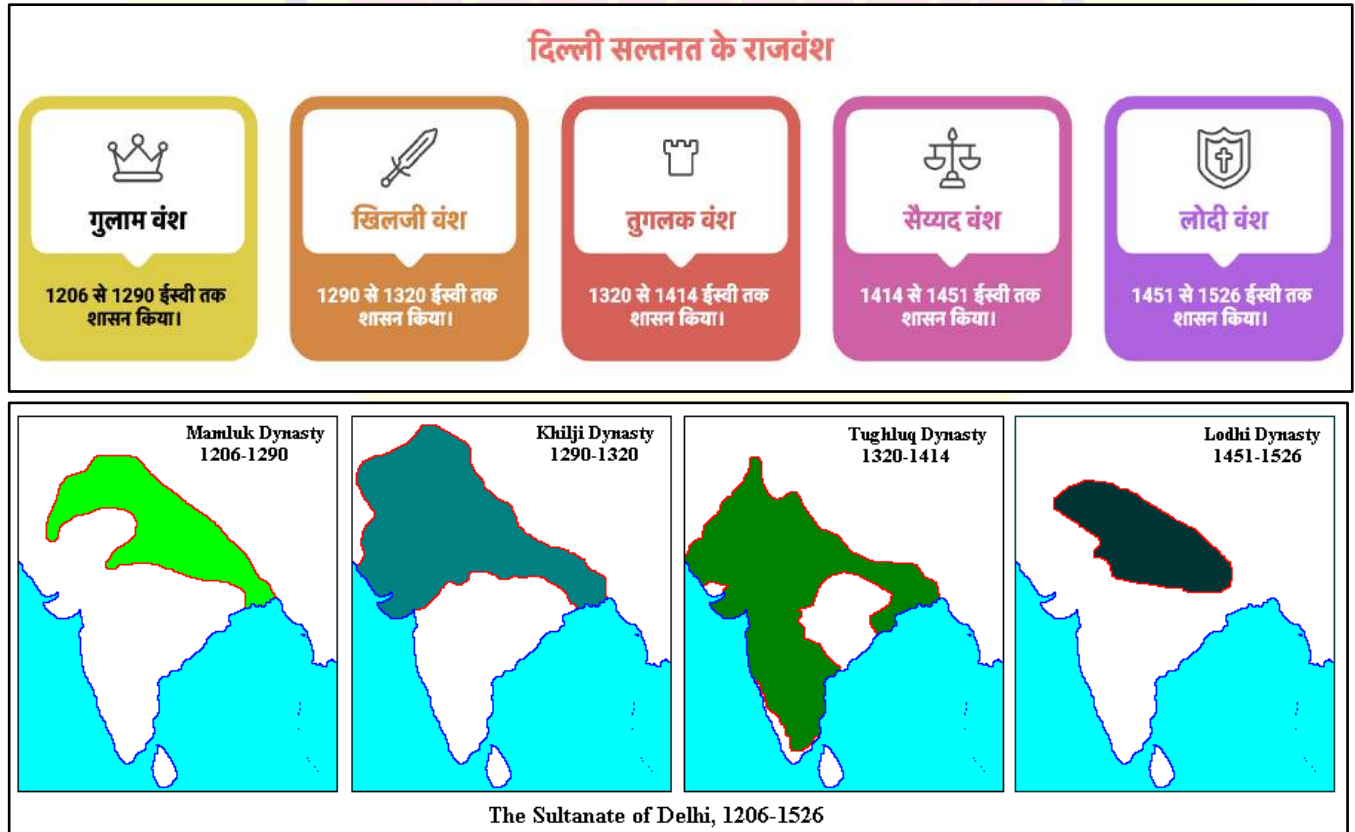
तुर्कों की सफलता के कारण:

- राजपूतों का असमर्थित और असंगठित होना।
- केंद्रीय सरकार का अभाव, छोटे-छोटे बिखरे हुए राज्य।
- तुर्कों का संगठित होना और राजपूत वैमनस्य का फायदा उठाना।

गोरी की मृत्यु के बाद साम्राज्य का विभाजन:

- गज़नी: ताज अल-दीन यीदुज
- सिंध: नासिर-उद-दीन कबाचा
- भारत: कुतुब-उद-दीन ऐबक

दिल्ली सल्तनत की वंशावलिऱाँ:



महत्वपूर्ण तथ्य:

- पहले तीन वंश तुर्क मूल के थे।
- सय्यद वंश अरबी थे, जिन्होंने पैगंबर मुहम्मद से वंशज होने का दावा किया। **लोधी अफगान** थे।
- अधिकांश सुल्तान गुलाम वंश से आए; सबसे कम सुल्तान लोधी वंश से।
- तुगलक वंश ने सबसे लंबे समय तक शासन किया और सबसे बड़े क्षेत्र पर राज्य किया (मोहम्मद बिन तुगलक के अधीन)। खिलजी वंश ने सबसे कम अवधि शासन किया।
- सय्यद वंश ने सबसे छोटे क्षेत्र पर शासन किया।

गुलाम वंश (1206–1290 ईस्वी)

- इसे ममलूक वंश या इल्बरी वंश भी कहा जाता है।
- "गुलाम वंश" इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके प्रमुख शासक—ऐबक, इल्तुतमिश और बलबन—पहले गुलाम थे, जो बाद में सुल्तान बने।
- कुतुब-उद-दीन ऐबक: मोहम्मद गोरी के गुलाम, उत्तर भारत के पहले स्वतंत्र मुस्लिम शासक बने।

कुतुब-उद-दीन ऐबक (1206-1210 ईस्वी)

- दिल्ली सल्तनत के संस्थापक।
- तुर्की गुलाम, गोरी द्वारा खरीदे गए, बाद में गवर्नर बने।
- मोहम्मद गोरी के गुलाम से स्वतंत्र शासक बने।
- तुर्क कबीले ऐबक से संबंधित।
- गुलाम वंश की स्थापना की।
- 'लाखबखश' (लाखों देने वाले) के नाम से प्रसिद्ध।
- संरक्षण: हसन-उन्निज़ामी (ताजुल-मसीर), फख्रुद्दीन (तारिख-ए-मुबारक शाह)।
- राजधानी: लाहौर।
- विभिन्न धातुओं में सिक्के जारी किए; अब्बासी खलीफ़ा का नाम नहीं लिखा।
- विजय अभियान: याल्दौज़ को हराया, बदायूँ और फर्रुखाबाद पर कब्जा।
- मृत्यु: 1210 ईस्वी में चौगान (पोर्तान) खेलते समय।

निर्माण कार्य:

- कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद (दिल्ली)
- अढ़ाई-दिन-का-जौंपड़ा (अजमेर)

Riyasat IAS Mentorship

	<ul style="list-style-type: none"> ● कुतुब मीनार की नींव रखी (पहली मंज़िल) कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के सम्मान में। <p>साहित्यिक संरक्षण:</p> <ul style="list-style-type: none"> ● हसन नज़ामी - ताजुल-मासिर ● फख़्रुल-दीन - तारिख-ए-मुबारकशाही
अरम शाह (1210 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none"> ● दुर्बल शासक, जिन्हें मुगलों के निमंत्रण पर इल्तुतमिश ने बदल दिया।
इल्तुतमिश (1210-1236 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none"> ● ऐबक के गुलाम; अरम शाह को हटाया। ● गुलाम वंश के वास्तविक संस्थापक। ● राजधानी: लाहौर → दिल्ली। ● 1229 में खलीफ़ा की मान्यता (मंसूर) प्राप्त की। ● इक्तादारी प्रणाली (गैर-वंशानुगत भू-अनुदान) शुरू की। ● सैन्य व्यवस्था: <ul style="list-style-type: none"> ○ सर-ए-जानदार (राजशाही सुरक्षा) ○ हसन-ए-कुलब (5000 घुड़सवार) ○ तुर्कन-ए-चहलगनी (राजा दरबारी समूह) ● मुद्राएँ: टंका (चांदी), जितल (तांबा) सिक्के जारी किए। ● निर्माण कार्य: <ul style="list-style-type: none"> ○ कुतुब मीनार पूर्ण किया ○ सुल्तानगढी मकबरा (दिल्ली), जामा मस्जिद (बदायूँ) ○ ख्वाज़िम शाह को आश्रय न देकर दिल्ली को चंगेज़ खान से बचाया। ● प्रशासन: चहलगनी/चालीसा (40 सदस्यों की परिषद) का गठन किया। ● साहित्यिक संरक्षण: मिनहाज-उस-सिराज (ताबकात-ए-नासिरी) का संरक्षण किया।
रुकनुद्दीन फ़िरोज़ शाह (1236 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none"> ● इल्तुतमिश का पुत्र, शाह तुर्कन के नियंत्रण में। ● उसकी अनुपस्थिति में अमीरों के समर्थन से रज़िया ने उसे हटाया।
रज़िया सुल्तान (1236-1240 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none"> ● वह 'भारत की पहली और एकमात्र मुस्लिम महिला शासक' थीं। ● पर्दा त्यागा; गैर-तुर्की अमीरों को स्थापित करने का प्रयास किया।

Riyasat IAS Mentorship

	<ul style="list-style-type: none"> ● याकूत (अबीसिनियाई) को अमीर-ए-अखुर नियुक्त किया। ● दरबार के अमीरों और धर्मगुरुओं द्वारा विरोध किया गया। ● सिंहासन ग्रहण के तुरंत बाद मुल्तान, बदायूँ, हांसी और लाहौर के गवर्नरों ने खुलकर विद्रोह किया। ● भटिंडा के गवर्नर अलतुनिया ने रज़िया की अधीनता स्वीकार नहीं की। ● याकूत के साथ रज़िया अलतुनिया के खिलाफ चलीं। ● अलतुनिया ने याकूत की हत्या कर दी और रज़िया को बंदी बना लिया। बाद में रज़िया ने अलतुनिया से विवाह किया और दोनों दिल्ली की ओर बढ़े। ● 1240 ईस्वी में रज़िया साजिश का शिकार होकर कैथल (हरियाणा) के पास हत्या कर दी गई।
बहम शाह (1240-1242 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none"> ● सुल्तानों और अमीरों के बीच सत्ता संघर्ष जारी रहा। ● शासनकाल में अराजकता व्याप्त रही।
अलाउद्दीन मसूद शाह	<ul style="list-style-type: none"> ● रुकनुद्दीन का पुत्र; कठपुतली शासक, अमीरों के नियंत्रण में।
नासिरुद्दीन महमूद	<ul style="list-style-type: none"> ● इल्तुतमिश का पौत्र, प्रभावहीन; धार्मिक मामलों में अधिक रुचि। ● वास्तविक सत्ता बलबन (उलूख खान) के हाथ में थी।
गियासुद्दीन बलबन (1266-1286 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none"> ● सल्तनत के सुदृढकर्ता; इल्बरी कबीले से संबंधित। ● मंगोलों को रोकने पर उलूखान की उपाधि; नासिर-अमीर-उल-मोमिन के नाम से भी प्रसिद्ध। ● अमीर खुसरो ने उनके दरबार को अलंकृत किया। ● चालीसा (चहलगनी) की शक्ति को तोड़ा और ताज की प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित की; यही सल्तनत की स्थिरता के लिए उनका सबसे बड़ा योगदान माना जाता है। <p>प्रशासन:</p> <ul style="list-style-type: none"> ● कुशल जासूसी नेटवर्क (दीवान-ए-बरिद): बलबन ने खुद को सूचित रखने के लिए जासूस नियुक्त किए। ● केंद्रीकृत सेना: आंतरिक संकटों और मंगोलों को रोकने के लिए। ● सैन्य विभाग की स्थापना: दीवान-ए-अर्ज।

Riyasat IAS Mentorship

	<ul style="list-style-type: none">• विभाग सुधार: वित्त विभाग (दीवान-ए-वज़ारत) का पुनर्गठन। <p>धार्मिक और दरबारी नीतियाँ:</p> <ul style="list-style-type: none">• शाही सिद्धांत (बरनी):<ul style="list-style-type: none">○ सुल्तान = ज़िल-ए-इलाही (ईश्वर का प्रतिबिंब)○ सिज्दा (सुल्तान के सामने प्रार्थना) और पैबोस (पैर चूमना) की प्रथा शुरू की।○ नौरोज़ (फारसी नववर्ष) मनाया।• फारसी दरबारी मॉडल ने उनके राजतंत्र की अवधारणा को प्रभावित किया।
कैयकुबाद (1287-1290 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">• बलबन का पौत्र; अमीरों द्वारा सिंहासन पर बैठाया गया।• उसके बाद उसके पुत्र कैमुरस आए, जिन्हें युद्ध मंत्री जलालुद्दीन खिलजी ने हत्या कर सिंहासन पर कब्ज़ा किया और 1290 ईस्वी में खिलजी वंश की स्थापना की।

खिलजी वंश (1290-1320 ईस्वी)

- खिलजी मूल रूप से तुर्क थे, जिन्होंने इल्बरी (गुलाम) वंश के अधीन सेवा की थी।
- **संस्थापक:** जलालुद्दीन खिलजी (मलिक फ़िरोज़ के नाम से भी जाने जाते हैं)।
- सुल्तान बनने से पहले, वे **कैकुबाद के शासन में अरिज़-ए-मुमालिक (युद्ध मंत्री)** थे।
- जलालुद्दीन के शासनकाल में **मलिक छज्जू** (बलबन का भतीजा) को कारा के गवर्नर के रूप में बने रहने की अनुमति दी गई।

महत्वपूर्ण नेता:

जलाल-उद-दीन खिलजी (1290-1296 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">• खिलजी वंश के संस्थापक; कैकुबाद के अधीन अरिज़-ए-मुमालिक थे।• हिन्दुओं के प्रति सहिष्णुता और उदारता के लिए प्रसिद्ध।• मंगोल आक्रमणों को रोका और युद्ध किया (1292 ईस्वी)।• उनके भतीजे अलाउद्दीन ने देवगिरी पर आक्रमण किया (1294 ईस्वी) और बाद में जलालुद्दीन की हत्या कर सिंहासन पर कब्ज़ा किया।
--	---

अलाउद्दीन खिलजी
(1296-1316 ईस्वी)

उपाधियाँ एवं विचारधारा:

- **उपाधियाँ:** सिकंदर-ए-आज़म, सेकेंड अलेक्ज़ेंडर
- पहला तुर्की सुल्तान जिसने धर्म और राजनीति को अलग किया; **उद्धरण:** "राजतंत्र में कोई रक्त संबंध नहीं होता।"
- **साहित्यिक संरक्षण:** अमीर खुसरो (तुर्की-ए-हिंद), बरनी (तारिख-ए-फ़िरोज़शाही)

मुख्य विजय अभियान:

- गुजरात (1297) - सोमनाथ का लूट
- रणथंभौर (1299) - राणा हमीर देव के खिलाफ
- चित्तौड़ (1301) - राणा रतन सिंह को पराजित (पद्मावती कथा - जयसी)
- देवगिरी (1307) - मलिक काफूर का दक्षिण अभियान
- मंगोलों को जालंधर, किली, अमरोहा, रवि में पराजित किया
- **मलिक काफूर के नेतृत्व में डेक्कन अभियान:**
 - रामचंद्र (देवगिरी)
 - प्रताप रुद्रदेव (वारंगल)
 - वीर बल्लाल तृतीय (द्वारसमुद्र)
 - वीर पाण्ड्य (मदुराई)

प्रशासनिक सुधार:

- अमीरों की संपत्ति जब्त की, शराब और सामाजिक सभाओं पर प्रतिबंध।
- स्थायी सेना बनाई, चेहरा (पहचान) और दाग (घोड़े की मुहर) प्रणाली लागू की।
- वेतन नकद में; कई इक्ताओं को समाप्त किया।



Alauddin Khalji's campaign into South India.

Riyasat IAS Mentorship

	<p>बाजार नियंत्रण:</p> <ul style="list-style-type: none">• 3 बाज़ार बनाए: अन्न, विलासिता की वस्तुएँ, गुलाम/घोड़े• दीवान-ए-रियासत की स्थापना, नायब-ए-रियासत के अधीन• मूल्य नियंत्रक अधिकारी: सहाना-ए-मंडी• उद्देश्य: कम वेतन पर बड़ी सेना बनाए रखना <p>आर्थिक सुधार:</p> <ul style="list-style-type: none">• मापन प्रणाली (मसाहत) - भूमि माप पर आधारित राजस्व, इकाइयाँ: बिस्वा, बीघा• पहली बार नकद में राजस्व निश्चित; उपज का 50% राज्य का हिस्सा• मुस्तखराज नियुक्त (राजस्व प्रवर्तन अधिकारी)• सराय-ए-अदल: बाजार का नियमन <p>स्थापत्य कला:</p> <ul style="list-style-type: none">• अलाई दरवाज़ा, सीरी किला, अलाई मीनार, हौज़-ए-खास, जमाइत खाना मस्जिद, हज़ार सुतुन (1000 स्तंभों का महल) <p>उत्तराधिकार:</p> <ul style="list-style-type: none">• खिज़र खान (पुत्र) को नामित किया, लेकिन सत्ता मलिक काफ़ूर ने ले ली।• मलिक काफ़ूर ने 35 दिन शासन किया, बाद में हत्या कर दी गई।
कुतुबुद्दीन मुबारक शाह	<ul style="list-style-type: none">• अलाउद्दीन का पुत्र; खुद को खलीफ़ा घोषित किया, उपाधि अल-वासिक बिल्लाह।• अपने पिता की कठोर नीतियाँ रद्द कीं।• विद्रोहों को दबाया, लेकिन प्रशासन में असमर्थ रहे।
नासिरुद्दीन खुसरू शाह (1320 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">• संक्षिप्त शासन; ग़ियासुद्दीन तुग़लक़ द्वारा पराजित, जिससे खिलजी वंश का अंत हुआ।

तुगलक राजवंश (1320-1414 ईस्वी)

गियासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">वंश के संस्थापक; 'कुराना' कबीले से संबंधित (इब्न बतूता के अनुसार)।उपाधि: गाज़ी (अविश्वासियों का संहारक)।अमीर खुसरो ने उनके उदय पर तुगलकनामा लिखा। <p>सैन्य और राजनीतिक नीतियाँ:</p> <ul style="list-style-type: none">मंगोलों के खिलाफ उत्तर-पश्चिमी सीमा को सुदृढ़ किया।जूनाखान को काकतियाओं (वारंगल) को हराने भेजा।सरस्वती और लहरावट की लड़ाइयों में खुसरो खान को पराजित किया।सेना को नकद वेतन दिया; पुलिस और न्यायपालिका को सुधारा। <p>आर्थिक और कृषि सुधार:</p> <ul style="list-style-type: none">भूमि मापन प्रणाली त्यागी, बताई प्रणाली (फसल साझेदारी) अपनाई।भूमि कर उपज का 1/10 तय किया। सिंचाई प्रणाली की शुरुआत; नहरें, बाग और किले बनवाए।अवैध जागीर रद्द की; किसान की स्थिति सुधारी।अश्व आधारित डाक प्रणाली शुरू की। <p>स्थापत्य कला: तुगलकाबाद किला बनवाया (दिल्ली का तीसरा शहर)।</p>
मोहम्मद बिन तुगलक / जौना खान (1325-1351 ईस्वी)	<p>उपाधियाँ एवं व्यक्तित्व:</p> <ul style="list-style-type: none">उपाधि: उलूखान; शिक्षित और महत्वाकांक्षी।दरबारी: इब्न बतूता (काज़ी एवं दूत), लेखक रिहला। <p>मुख्य विद्रोह:</p> <ul style="list-style-type: none">बहाउद्दीन गुरचाप (सागर) और किशलु खान (सिंध, मुल्तान) द्वारा विद्रोह।दक्षिण भारत में अलगाव:<ul style="list-style-type: none">विजयनगर (1336) – हरिहर और बुक्काबहमनी (1347) – हसन गंगूमदुराई सल्तनत

Riyasat IAS Mentorship

प्रमुख प्रयोग (विफल):

- राजधानी स्थानांतरण (1328-1336): दिल्ली → दौलताबाद (बाद में पलटा गया)।
- टोकन मुद्रा: कांस्य सिक्के = चांदी (नकली सिक्कों के कारण विफल)।
- खुरासन अभियान: 3.7 लाख सेना जुटाई, योजना रद्द।
- काराचिल अभियान: कुमाऊँ पर्वत - आपदा।

दोआब कर नीति:

- गंगा-यमुना दोआब में कर बढ़ाया → किसानों का पलायन और अकाल।
- कृषि विभाग (दीवान-ए-कोही) स्थापित किया।
- राजस्व अधिकारी: वली-उल-खराज नियुक्त।
- किसानों को तक्कावी ऋण दिए।
- मॉडल फार्म: 64 वर्ग मील विकसित।

धार्मिक नीति:

- हिंदुओं के प्रति सहिष्णु।
- उलेमाओं और काज़ियों को दबाया; धर्म और शासन को अलग किया।

निर्माण कार्य:

- जहाँपनाह (दिल्ली का चौथा शहर) की स्थापना।
- अदीलाबाद किला बनवाया।

फ़िरोज़ शाह

तुग़लक़ (1351-

1388 ईस्वी)

प्रशासन और धार्मिक नीति:

- खान-ए-जहाँ मक़बल (तेलुगु ब्राह्मण परिवर्तित) को वज़ीर नियुक्त किया।
- उलेमाओं को शांत किया:
 - जिज़्या को अलग कर बनाया (केवल महिलाएँ, बच्चे और विकलांग छूट)।
 - मुस्लिम महिलाओं को तीर्थस्थलों पर जाने से रोका।
 - महल से भित्ति चित्र मिटाए।
 - धर्मगुरुओं को विशेष छूट दी।

सांस्कृतिक योगदान:

- ज्वालामुखी मंदिर से 1300 संस्कृत पांडुलिपियाँ संग्रहीत करवाई और अरिज़ुद्दीन खान से अनुवाद कराया (दलाइल-ए-फ़िरोज़शाही)।

Riyasat IAS Mentorship

• संरक्षण:

- बरनी (तारिख-ए-फ़िरोज़शाही, फ़तवा-ए-जाहँदारी)
- ख़वाजा अब्दुल मलिक इस्लामी (फ़तूह-उस-सलातिन)

- फ़िरोज़ ने स्वयं लिखा फ़तूहात-ए-फ़िरोज़शाही।

प्रशासनिक सुधार:

• विभाग स्थापित किए:

- दीवान-ए-बंदगान (गुलाम विभाग)
- दीवान-ए-ख़ैरात (अनाथ/विधवा कल्याण)
- दर-उल-शफा (निःशुल्क अस्पताल)
- गरीब मुस्लिमों के लिए विवाह ब्यूरो

- सार्वजनिक कार्य विभाग।

- इक्ता प्रणाली पुनर्जीवित; अमीरों और सेना के लिए विरासती बनाई।

सैन्य और राजस्व नीति:

- विरासती भर्ती और भूमि अनुदान (जागीर प्रणाली) लागू की।
- सिकके जारी किए: आधा (½ जितल), बिटच (¼ जितल)।
- चार इस्लामी कर लागू: ख़राज़, खुम्स, ज़कात, जिज़्या।
- शाही कारखानों की स्थापना।

सिंचाई और अवसंरचना:

- 5 प्रमुख नहरें, बाग़ और जलाशय बनाए।
- जलकर (हक़-ए-श्रीब) लगाया।
- ब्रिटिशों द्वारा "सिंचाई विभाग का पिता" कहा गया।

स्थापत्य और नगरी योजना:

- नगर बनाए: फतेहाबाद, हिसार, फ़िरोज़ाबाद (फ़िरोज़शाह कोटला, दिल्ली का पाँचवाँ शहर)
- जौनपुर की स्थापना मोहम्मद बिन तुग़लक़ की स्मृति में।
- टोपरा और मेरठ से अशोक स्तंभ दिल्ली लाए।

विफलताएँ:

- बंगाल पर असफल अभियान → बंगाल स्वतंत्र हो गया।

Riyasat IAS Mentorship

नासिर-उद-दीन महमूद शाह (1394-1412 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">• तुग़लक़ वंश के अंतिम शासक।• तैमूर के आक्रमण (1398 ईस्वी) का सामना किया – दिल्ली तबाह हुई।• दिल्ली सल्तनत विखंडित; मालवा और गुजरात जैसे राज्यों का उदय।• तुग़लक़ वंश का अंत 1412 ईस्वी में हुआ।• दौलत खान (वास्तविक शासक) को खिज़र खान ने पराजित किया, जिन्होंने सैय्यद वंश की स्थापना की।
---	---

सैय्यद वंश (1414-1450 ईस्वी)

खिज़र खान (1414-1421)	<ul style="list-style-type: none">• सुल्तान बनने से पहले तैमूर द्वारा मुल्तान और दिल्ली का गवर्नर नियुक्त।• सैय्यद वंश के संस्थापक।
मुबारक शाह (1421-1434)	<ul style="list-style-type: none">• ख़ुतबा और सिक्के अपने नाम से जारी किए।• भटिंडा में और खोखान प्रमुख जसरत के खिलाफ विद्रोह दबाए।• योजनाबद्ध नगर मुबारकाबाद का निर्माण किया।• इतिहासकार याहिया बिन अहमद सिरहिंदी (तारिख-ए-मुबारकशाही) का संरक्षण किया।
मुहम्मद शाह (1434-1443)	<ul style="list-style-type: none">• असमर्थ शासक।• विद्रोही क्षेत्रों को नियंत्रित करने में विफल: कटेहर, बदायूँ, एटावा, पाटियाली, ग्वालियर, काम्पिल, नागौर और मेवात; कारण अमीरों की साजिश।
अला-उद-दीन आलम शाह	<ul style="list-style-type: none">• बदायूँ में निवास किया।• बहलुल लोदी द्वारा हटाए गए, जिससे सैय्यद वंश का अंत हुआ।

लोधी वंश (1451-1526 ईस्वी)

- अफ़ग़ान वंश, दिल्ली सल्तनत का अंतिम वंश।
- संस्थापक: बहलुल खान लोधी।

बहलुल लोधी (1451-1489 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">• पहला अफ़ग़ान शासक जिसने लोधी वंश की नींव रखी।• अमीरों को संतुष्ट करने की नीति अपनाई।• जौनपुर सल्तनत को पराजित किया (लगभग 1476) और क्षेत्र को मिलाया।• शार्की वंश को मिलाया; बहलोल तांबे के सिक्के जारी किए।• ख़ुतबा में अपने नाम से सिक्के जारी किए।
सिकंदर लोधी (1489-1517 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">• सबसे महान लोधी शासक, महमूद बेगरहा और राणा सांगा के समकालीन।• बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया: दरिया खान।• कुशल जासूसी प्रणाली बनाई; जागीरदारों की शक्ति को नियंत्रित किया।• व्यापार को बढ़ावा दिया और गज़-ए-सिकंदरी (भूमि माप) लागू किया।• अनाज पर चौकसी शुल्क समाप्त किया; लेखा-परीक्षण शुरू किया।• कई हिंदू मंदिरों को नष्ट किया; जिज़्या कर फिर से लागू किया।• कवि के रूप में गुलरुक उपनाम से रचना की।• राजधानी दिल्ली से आगरा स्थानांतरित (~1504 ईस्वी), आगरा की स्थापना की।• फरहंग-ए-सिकंदरी (आयुर्वेदिक ग्रंथ) का अनुवाद किया।
इब्राहिम लोधी (1517-1526 ईस्वी)	<ul style="list-style-type: none">• जिद्दी, असहिष्णु शासक; अमीरों का समर्थन खो दिया।• अमीरों और अपने पुत्र दिलवर खान के प्रति कठोर।• सिकंदर लोधी की मृत्यु के बाद साम्राज्य उनके और भाई के बीच विभाजित।• बिहार के गवर्नरों ने स्वतंत्रता घोषित की।• पंजाब के गवर्नर दौलत खान ने बाबर को आक्रमण के लिए आमंत्रित किया।• पहली पानीपत की लड़ाई (1526) में बाबर द्वारा पराजित और मारा गया, जिससे लोधी शासन का अंत।• उनके शासनकाल में संस्कृत ग्रंथ लज्जत-ए-सिकंदरी की रचना हुई।

Riyasat IAS Mentorship

- अफ़ग़ान साम्राज्य (लोधी वंश) केवल 75 वर्षों तक चला।
- इब्राहिम लोधी की पराजय के साथ, सल्तनत काल समाप्त हुआ।
- एक विद्वान ने प्रसिद्ध रूप से कहा: “दिल्ली की सल्तनत, जो तराइन के युद्धभूमि (लगभग 1192 ईस्वी) में जन्मी थी, पानीपत के युद्धभूमि (लगभग 1526 ईस्वी) पर कुछ मील दूर अपनी अंतिम साँस ली।”

सल्तनत प्रशासन की विशेषताएँ

केंद्रीय प्रशासन	केंद्रीय विभाग (दीवान):
<ul style="list-style-type: none">• सुल्तान: सर्वोच्च कानूनी नेता।• मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्राप्त।• नायब: सबसे शक्तिशाली पद; सुल्तान के अधिकार संभाले और सभी विभागों का नियंत्रण किया।• वज़ीर: वित्त विभाग (दीवानी वज़रत) का प्रमुख।• मुख्य काज़ी: न्यायिक विभाग का प्रमुख।• अरीज़-ए-मुल्क: सैन्य प्रमुख।• वकील-ए-दर: दरबार में शिष्टाचार बनाए रखने वाला अधिकारी।	<ul style="list-style-type: none">• दीवान-ए-वज़रत: वित्त• दीवान-ए-अरीज़: सैन्य• दीवान-ए-इंशा: पत्राचार• दीवान-ए-रिसालत: विदेश और धार्मिक मामलों के लिए• दीवान-ए-मुस्तख़राज: ऋण वितरण• दीवान-ए-रियासत: वाणिज्य• दीवान-ए-कोही: कृषि• दीवान-ए-बंदगान: गुलाम• दीवान-ए-खैरात: चैरिटी• दीवान-ए-इस्तियाक: पेंशन

प्रांतीय प्रशासन	प्रशासनिक पद एवं इकाई:
<ul style="list-style-type: none">• प्रांतों को इक़ता कहा जाता था – ये सुल्तान द्वारा अमीरों और सैन्य कमांडरों को सौंपे जाते थे।• गाँव सबसे बुनियादी प्रशासनिक इकाई था।• साहिब-ए-दीवान: प्रांतीय राजस्व का नियंत्रण।	<ul style="list-style-type: none">• इक़ता (प्रांत): प्रमुख – मुक्ती• शिक (जिला): प्रमुख – सिकदर• परगना (तहसील/तालुका): प्रमुख – अमिल• ग्राम (गाँव): प्रमुख – ख़ुत

इक़ता प्रणाली:

- **इक़ता का अर्थ** है किसी व्यक्ति को सौंपा गया भूमि या राजस्व।
- अधिकारियों को **इक़तादार**, **मुक्ती**, या **वाली** कहा जाता था।
- मोहम्मद घोरी द्वारा शुरू की गई; इग़ातमिश द्वारा संस्थागत किया गया।

- बलबान ने प्रणाली में बहुत भ्रष्टाचार उजागर किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने कई इक़ताओं को ख़लिसा (राजभूमि) के लिए वापस लिया।
- फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ के समय यह विरासती हो गई।

अर्थव्यवस्था

कृषि:

- किसानों को अपनी उपज का 1/3 से 1/2 भूमि कर के रूप में देना पड़ता था।
- इब्न बतूता: मिट्टी बहुत उपजाऊ थी।
- यात्रियों के लिए सराय (विश्राम गृह) राजमार्गों पर बनाए गए।
- उद्योग: तेल निकालना, गुड़ बनाना, वस्त्र बुनाई।
- रेशम उत्पादन बड़े पैमाने पर शुरू किया गया।
- बंगाल और गुजरात अच्छे वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध हैं (जैसे, कॉम्बे वस्त्र, सोना और चाँदी का काम, मसलिन सिल्क)।
- भारतीय वस्त्रों का व्यापक निर्यात।
- तुर्कों ने कागज़ निर्माण, लोहा की अड़, कवच, चरखी, पुस्तक बाइंडिंग और ब्लॉक प्रिंटिंग जैसे शिल्प पेश किए।
- धातु उद्योग का विकास।
- घोड़े के रिले और तेज़ धावकों पर आधारित डाक व्यवस्था विकसित की।

सिक्के प्रणाली का विकास:

- इल्तुतमिश ने चाँदी के टंके और तांबे के जिताल जारी किए।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत की विजय के बाद सोने के दिनार लोकप्रिय किए।
- मुहम्मद बिन तुग़लक़ ने टोकन मुद्रा का प्रयोग किया।
- कई शहरी केंद्रों का उदय शहरीकरण की ओर ले गया (13वीं-14वीं शताब्दी)।

भूमि कर प्रणाली

भूमियों को वर्गीकृत किया गया:

- इक़ता भूमि: अधिकारियों को भुगतान के बजाय आवंटित।
- ख़लिसा भूमि: सीधे सुल्तान के नियंत्रण में; राजकीय दरबार के लिए राजस्व।
- इनाम भूमि: धार्मिक नेताओं/संस्थाओं को प्रदान की गई।
- मुहम्मद बिन तुग़लक़ और फ़िरोज़ तुग़लक़ ने सिंचाई और टक्कावी ऋण के माध्यम से कृषि को बढ़ावा दिया।
- मुक्ताई: भूमि कर तय करने की प्रणाली।

सल्तनत में समाज

- इस अवधि में हिन्दू समाज की संरचना में बहुत कम बदलाव।
- सती प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित।
- पर्दा प्रणाली (महिलाओं का अलगाव) उच्च वर्ग की महिलाओं में आम हुई; अरबों और तुर्कों द्वारा शुरू।
- मुस्लिम समाज को जातीय समूहों में बांटा गया: तुर्क, ईरानी, अफ़ग़ान, भारतीय मुस्लिम – समूहों के बीच विवाह नहीं।
- हिन्दू अमीरों को उच्च सरकारी पद शायद ही दिए गए।
- हिन्दुओं को जिम्मी (सुरक्षित लोग) माना गया और उन्हें जिज़्या कर देना पड़ता था।

सल्तनत की संस्कृति:

कला और वास्तुकला:	साहित्य:
<ul style="list-style-type: none"> • तुर्की प्रभाव: गुंबद, मीनारें, मेहराब, सहारा वाली छतें। • तुर्कों ने स्लैब और बीम विधि का प्रयोग किया, और इमारतों को संगमरमर तथा लाल और पीले बलुआ पत्थर से रंगा। • अरबेस्क: ज्यामितीय और पुष्पाकृति कुरानिक शिलालेख। • कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद (दिल्ली): ऐबक द्वारा निर्मित पहली सल्तनत स्मारक। • कुतुब मीनार: ऐबक ने शुरू किया, इल्तुतमिश ने पूरा किया। • अढ़ाई दिन का झोपड़ा (अजमेर): हिन्दू मंदिर की विशेषताएँ। • अलाउद्दीन खिलजी: अलाइ दरवाज़ा (लाल बलुआ पत्थर), सीरी किला, हज़ार सुतून, हौज़-ए-खास। • मुहम्मद बिन तुग़लक़: ग़ियासुद्दीन की मक़बरा। • फ़िरोज़ तुग़लक़: कुत्ला क़िला, दिल्ली। 	<ul style="list-style-type: none"> • प्रसिद्ध इतिहासकार: हसन निज़ामी, मिनहाजुस-सिराज, ज़ियाउद्दीन बारानी, शम्स-ए-सिराज आफ़िफ़। • ज़िया नक़्शाबी: संस्कृत कथाओं का फ़ारसी में अनुवाद करने वाले पहले। • तुतू नाम: फ़ारसी "तोते की कथाएँ" शृंखला। • राजतरंगिणी – कल्हण, ज़ैन-उल-अबिदिन के समय। • बंगाली सुल्तानों ने मालधर बसु (श्री-कृष्ण विजय) और नुसरत शाह (महाभारत बांग्ला में) का संरक्षण किया। • अमीर ख़ुसरू (खिलजी दरबार के कवि): आइना-ए-सिकंदर, हष्ट बहीष्ट, लैला-मजनू, तुग़लक़ नामा। • अबू बक्र: चच नामा (सिंध का इतिहास)। • फ़िरोज़ शाह: फ़तवा-ए-फ़िरोज़शाही। • इब्न बतूता: किताब-उल-रिहाला (यात्रा वृत्तांत)। • फ़िरदौसी: शाह नामा (महमूद गज़नी के शासनकाल)।

Riyasat IAS Mentorship

लेखक	ग्रंथ / योगदान
हसन निज़ामी	ताज़-उल-मासिर (तारिक मोहम्मद बिन घोरी और ऐबक)
मिन्हाजुस-सिराज	तबक़ात-ए-नासिरी
ज़ियाउद्दीन बारानी	फ़तवा-ए-ज़ियाउद्दीन, तारिक-ए-फ़िरोज़शाही
शम्स-ए-सिराज आफ़िफ़	तारिक-ए-फ़िरोज़ी
अमीर ख़ुसरू	आइना-ए-सिकंदर, हष्ट बहीष्ट, तुग़लक़ नामा, लैला-मजनू
अबू बक्र	चच नामा (सिंध का इतिहास)
फिरदौसी	शाह नामा (महमूद गज़नी का शासन)
इब्र बतूता	किताब-उल-रिहाला (यात्रा वृत्तांत)
मालधर बसु	श्री-कृष्ण विजय
नुसरत शाह	महाभारत (बांग्ला अनुवाद)
पिर भोडान	मन कौतुहल

संगीत:

- नए वाद्ययंत्र: सारंगी और रबाब पेश किए गए।
- अमीर ख़ुसरू: नए राग बनाए (घोरा, सनम), क़व्वाली का विकास किया, सितार का आविष्कार किया।
- रागदर्पण का फ़ारसी में अनुवाद फ़िरोज़ तुग़लक़ के शासन में हुआ।
- सूफ़ी संत पिर भोडान ने मन कौतुहल रचना।